सिंचाई

स्टीविया की फसल में सतत् रूप से नमी बनाये रखना आवश्यक होता है। सर्दियों के दिनों में 7 से 10 दिन एवं गर्मियों में 3 से 4 दिन के अंतराल में हल्की सिंचाई आवश्यक होती है। सूक्ष्म स्प्रिंकलर सिंचाई के लिए अच्छा साधन है।

विदोहन

स्टीविया का रोपण करने के 35 से 40 दिन के बाद फूल आने लगते है। फूलों के आने पर स्टीविया की पत्तियों से प्राप्त होने वाला उपयोगी पदार्थ स्टीवियोसाइड की मात्रा व गुणवत्ता में कमी आने लगती है। इसलिए फूल आते ही उन्हें तोड़ देना चाहिए।

फसल की परिपक्वता एवं उपज प्राप्ति

रोपण के 3 – 4 माह (90 से 105 दिन) के बाद ही फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पहली कटाई सितम्बर माह के अंत में की जाती है, जब पौधों की ऊँचाई लगभग 40 से 60 से.मी. हो जाती है। पहली कटाई के बाद 45 – 60 दिन में दूसरी कटाई कर लेना चाहिए। अधिकतम उत्पादन जिसमें स्टीवियोसाइड की मात्रा अधिकतम हो, प्राप्त करने हेतु पुष्पन आने के पूर्व ही फसल की कटाई कर ली जानी चाहिए।

अनुमानित उत्पादन

स्टीविया की खेती से अनुमानित 3000 – 3500 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष सूखे पत्तों का उत्पादन होता है।

पत्तियों को सुखाना

काष्ठीय तने सहित नरम हरी पत्तियों को कटाई के तुरंत पश्चात छायादार स्थान पर सुखाया जाता है।

थ्रेसिंग

पत्तियों एवं डंठलों को सुखाने के बाद इन्हें अलग–अलग कर लिया जाता है और अन्य अशुद्धियां भी पृथक कर ली जाती है।

पैक करना

स्टीविया की अच्छी तरह से सूखी पत्तियों एवं पाउडर को प्लास्टिक लगे गत्ते के डिब्बे में पैक कर के उस पर लेबल लगा देना चाहिए जिसमें सभी आवश्यक जानकारी दर्ज हों।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क: 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्स: 0761–2661304

ई–मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब: http://www.rcfccentral.org

स्टीविया

(*Stevia rebaudiana*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020

स्टीविया
(Stevia rebaudiana)

कुल	:	***Asteraceae***
हिन्दी नाम	:	मधुतुलसी, मधुपत्र, मीठी–पत्ती, मधुकारी
अंग्रेजी नाम	:	***Candy leaf, Sweet leaf, Sugar leaf***
व्यापारिक नाम	:	स्टीविया
उपयोगी भाग	:	पत्तियां एवं तना

औषधीय उपयोग

स्टीविया की पत्तियों में स्टीवियोसाइड तथा रिबोडिओसाइड नामक तत्व पाये जाते हैं। इसकी पत्तियाँ शक्कर से 200 – 300 गुना मीठी होती है। इसमें कैलोरी नगण्य होती है। इसे मीठे सुगंधित पेयों, डेयरी आधारित मिठाई, जैम–जैली, चॉकलेट–टॉफी, भोज्य पदार्थो के परिरक्षण, टॉनिक एवं औषधीय रूप में प्रयोग किया जाता है। इसमें विषाणुरोधी (antiviral), रोगाणुरोधी (antimicrobial), उच्च रक्तचापरोधी (antihypertensive), कवकरोधी (antifungal), प्रतिउपचायक (antioxidant), सूजनरोधी (anti-inflammatory), रक्तशर्करारोधी (hypoglycemic) गुण भी पाये जाते हैं। इसका उपयोग यकृत विकारों (liver disorders) को दूर करने में भी किया जाता है।

आकारिकी लक्षण

यह एक छोटा, हरा, झाड़ीनुमा बहुवर्षीय पौधा है। इसका जीवन–काल 3 – 4 वर्ष तथा लंबाई 68 – 72 सेमी. तक होती है। पत्तियां डंठल–रहित, भाले रूपी, एक–दूसरे के विपरीत दिशा में एकांतर स्थित आरी की तरह दांतेदार रचना वाली होती है।

पुष्पीय लक्षण

इसके पुष्प छोटे एवं सफेद अथवा हल्के बैंगनी रंग के होते हैं। पुष्प के सूखने के पश्चात् इससे बीज प्राप्त होते हैं।

वितरण

स्टीविया पश्चिमी उत्तर अमेरिका से लेकर दक्षिण अमेरिका के उष्ण कटिबंधीय एवं उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। फसल के रूप में कई देशों, जैसे – जापान, चीन, ताईवान, थाइलैंड, कोरिया, मैक्सिको, मलेशिया, इन्डोनेशिया, तन्जानिया, कनाडा तथा यू.एस.ए. में इसकी खेती काफी लोकप्रिय है। भारतवर्ष में भी अनेक स्थानों पर इसकी खेती की जा रही है।

जलवायु

यह एक समशीतोष्ण जलवायु का पौधा है, जिसको अधिक ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मियों के मौसम में भी वार्षिक फसल के रूप में उगाया जा सकता है। इसके साथ–साथ दक्षिण भारत में मैदानी शीतोष्ण क्षेत्रों में इसे बहुवर्षीय फसल के रूप में उगाया जाता है। उत्तर एवं मध्य भारत का तापक्रम इसके लिए अनुकूल है। स्टीविया के लिए तापमान 10° से 38° सेंटीग्रेड होना चाहिए तथा आर्द्रता 64 से 86 प्रतिशत एवं औसत वार्षिक वर्षा 140–145 सेमी. तक उपयुक्त मानी गई है। यह फसल पाले के प्रति संवेदनशील है।

मृदा

स्टीविया को उचित जल निकास वाली विभिन्न प्रकार की मिट्टी जैसे– लाल, दोमट, रेतीली मिट्टी से लेकर चिकनी मिट्टी में आसानी से उगाया जा सकता है। इसके लिए मिट्टी का पी.एच. मान 5.5 से 7.5 तक के बीच होना चाहिए।

कृषि तकनीक

स्टीविया की व्यावसायिक खेती करने के लिए सर्वप्रथम इसकी कलम/बीज से पौधशाला/नर्सरी तैयार की जाती है। पौधशाला को खाद आदि डालकर अच्छी तरह से तैयार कर लिया जाता है।

भूमि की तैयारी तथा पौध रोपण की विधि

स्टीविया की खेती पंचवर्षीय फसल के रूप में की जाती है। एक बार फसल रोपण के पश्चात् फसल पांच वर्ष तक खेत में रहेगी। खेत को तैयार करने के लिए खेत की अच्छी प्रकार गहरी जुताई करके, उसमें प्रति हेक्टेयर 3 टन वर्मीकंपोस्ट खाद अथवा 6 टन कम्पोस्ट खाद के साथ–साथ 120 कि.ग्रा. जैविक खाद मिला दी जाती है। खेत को भूमि जनित रोगों तथा दीमक आदि से सुरक्षित रखने के लिये नीम की पिसी हुई खली भी खेत तैयार करते समय खेत में मिला दी जाती है।

स्टीविया का रोपण 30 से 45 से.मी. ऊँची तथा 60 से.मी. चौड़ी मेड़ों पर किया जाता है ताकि वर्षा की स्थिति में अथवा सिंचाई करते समय पानी नालियों में से निकल जाये तथा जल भराव की स्थिति न बनें। मई माह के मध्य में स्टीविया को मेड़ों पर रोपने के लिए 3 से 4 से.मी. लम्बी कलम को 50 से 60 से.मी. अंतराल की पंक्तियों में रोपित किया जाता है। इस प्रकार एक लाख पौधे प्रति हेक्टेयर रोपित किये जा सकते है। कलम को रोपने के 15 – 20 दिन पूर्व पॉलीथिन बैग अथवा नर्सरी में पौधे को लगा कर रखने से अधिक जीवितता प्रतिशत (Survival percentage) प्राप्त होता है।

निदाई – गुड़ाई

स्टीविया के पौधों को खरपतवार से मुक्त रखना आवश्यक होता हैं। इसके लिए 15 से 20 दिन के अंतराल पर हाथ से निदाई – गुड़ाई की जानी चाहिए।